सुर साधना

समाज में और प्रकृति के साथ सुर-ताल की साधना
ज्ञान मार्ग

अनियमित पत्रक | वाराणसी ज्ञान पंचायत की पहल | सीमित वितरण के लिए

वर्ष 1, अंक 2, जून 2022
सहयोग राशी रु. 10/-

साईं वही ज्ञानी है, जो जाणे पर पीड़

सम्पादकीय : सुर कैसे सधें ...

वाराणसी ज्ञान की नगरी है. ज्ञान की विविध धाराओं का संगम स्थान है. इन्हीं धाराओं ने मिलकर यहाँ सदाबहार जीवन-संगीत को जन्म दिया है. यह नगरी ऐसे संगीत रस में रची-बसी है, जिसमें सामान्य जीवन के विविध रंग अनेक ज्ञान-शिखरों को दर्शाते हैं और सबके लिए अलौकिक आनंद के सहज रास्ते खोलते हैं. हर युग में जीवंत यह नगरी उद्घोष करती मानी गई कि जीवन का संगीत सुरीला हो, ताल-मेल में रहे और विकृति और विकार से मुक्त हो, इसके लिए सभी ज्ञान-धाराओं की बराबर की भूमिका है.

आज वाराणसी ही नहीं बल्कि अनेक शहर बेसुरे हो रहे हैं, जीवन अभावों के दर्द से चीखता नज़र आता है. गांवों के जीवन रस को खींच कर पनपते इन शहरों का हश्र यही होता है. सुर साधना की यह पहल इस दर्द से मुक्ति का ज्ञान मार्ग खोजने का प्रयास है.

किसी भी नगर की रचना, पुर्निर्माण और गति को न्याय आधारित बनाने में सामान्य जीवन और सामान्य लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. सामान्य जीवन में बसे विविध पक्ष, भाव और रंग फलने-फूलने के प्रयास और रचना व पुनर्रचना की नित-नवीन क्रियाएं अनेक ज्ञान धाराओं के बीच निरंतर मेल-जोल और भाईचारे की मांग करती हैं, संवाद, निर्णय, पहल कदमी और रचना में साथ-साथ भागीदारी की मांग करती है. लोक अथवा सामान्य जीवन में बसा ज्ञान न्याय आधारित ज्ञान होता है.

शहर-गाँव, बस्ती-बाजार, नदी-जंगल-पहाड़, धरती-आकाश आदि से मनुष्य के संबंधों के विस्तृत जाल का ज्ञान किसी एक दिमाग, एक ग्रन्थ, एक विश्वविद्यालय, एक विचारधारा में नहीं अटता. ज्ञान के विविध रूप हैं, इसे अभिव्यक्त करने के विविध प्रकार हैं और इनके जानने वाले भी विविध तरह के लोग/समाज हैं. लेकिन यह नहीं कि कोई ज्ञान या किसी का ज्ञान दूसरे से कम या अधिक है. जब विविध ज्ञान के प्रकार/पद्धतियाँ आदि को समुचित भूमिका निभाने का अवसर मिलता है तभी किसी समाज या नगर का सर्वांगीण और सबका विकास होता है.

वाराणसी ज्ञान पंचायत की ओर से प्रकाशित यह पत्रक इस शहर की ज्ञान परंपराओं और ज्ञानियों के बीच संवाद स्थापित कर जीवन संगीत का सुर फिर से साधने का प्रयास है, इस प्रयास में हम सभी के सहयोग की उम्मीद रखते हैं.

•

मैं जाता सुरझावन हारी, तू राख्यो उरझाई रे
कैसे होई, तेरा मेरा मनवा कैसे होई एक रे.

लोकविद्या दिवस उत्सव

1 मई 2022 को अस्सी घाट पर हुई वाराणसी ज्ञान पंचायत में लोकविद्या, यानि समाज में स्थित ज्ञान, की विविधता पर बात हुई. किसान, कारीगर, मजदूर, सामान्य महिलाओं और तमाम पटरी-ठेले-गुमटी के दुकानदारों (यानि लोकविद्या-समाज) के ज्ञान का समाज और राष्ट्र के निर्माण में जो अभूतपूर्ण योगदान हैं, उसकी बात पंचायत में की गई.

यह भी बात हुई कि ये सभी समाज अपने बल पर ज्ञान और हुनर हासिल करते हैं तथा अपने उद्यम की पूरी जोखिम भी अपने कन्धों पर लेते हैं, सरकारें इन्हें कोई सहयोग नहीं करतीं, या करती भी हैं तो आंशिक ही, उलटे कई बार तो बाधा डाली जाती है. जबकि स्कूल कालेज के ज्ञान के लिए सरकारें बाकायदा बजट में बड़ा प्रावधान करती हैं. ऐसा इसलिए है क्योंकि लोकविद्या-समाज के लोगों को वे केवल मज़दूर मानती हैं और इनके कार्यों में ज्ञान का जो हिस्सा है उसे 'ज्ञान' नहीं मानतीं.

सरकारें रोज़गार का सवाल भी केवल पढ़े-लिखे लोगों तक सीमित कर देती हैं. शेष सभी लोग खुद अपना रोज़गार पैदा करें ऐसा मानती हैं. यह तो खुले आम दोहरा मानदंड अपनाना हुआ.

इस वाराणसी ज्ञान पंचायत में यह घोषणा की गई कि लोकविद्या-समाज ज्ञानी समाज है और इन्हें मज़दूर समझना या कहना उनका अपमान है, हमारी संस्कृति के खिलाफ है. पंचायत में यह आग्रह रखा गया कि लोकविद्या को सम्मानित ज्ञान का दर्जा यानि विश्वविद्यालय के ज्ञान के बराबर का दर्जा मिलना चाहिए. इससे समाज में सबकी सम्मानित भागीदारी के अवसर पैदा होंगे और सामाजिक व आर्थिक गैर-बराबरी को दूर करने के रास्ते बनेंगे.

यह भी प्रस्ताव रखा गया कि 1 मई को 'मज़दूर दिवस' मनाने की जगह इसे 'ज्ञान दिवस' या 'लोकविद्या दिवस' के रूप में मनाया जाना चाहिए.

•

ज्ञान, आय और रोज़गार

समाज को न्यायपूर्ण बनाने की ओर बढ़ने के लिए हर व्यक्ति के ज्ञान, रोज़गार और आय का समुचित संतुलन बनाना होता है. समाज के हर व्यक्ति के पास ज्ञान है. हर व्यक्ति को उसके ज्ञान के अनुरूप जीविका कमाने और समाज की गति में अपना योगदान करने का अवसर मिलना **'न्याय का राज'** होने की एक अनिवार्य शर्त है. समाज का संगठन और संचालन करने वाली व्यवस्थायें तभी अपनी ज़िम्मेदारी निभाती मानी जाएँगी जब वे हर तरह के ज्ञानी को उसके ज्ञान के अनुरूप रोज़गार पाने की नीति को लागू करने की व्यवस्था करें और एक सम्मानपूर्ण आय का अधिकारी बनाये.

समाज और देश के लिए किसानी, कारीगरी, पटरी-ठेले की दुकानदारी और तरह-तरह की सेवा के तमाम कार्य उतने ही महत्वपूर्ण माने जाने चाहिए जितने किसी प्रोफ़ेसर, वैज्ञानिक, इंजीनियर अथवा डाक्टर के.

दूसरे शब्दों में समाज में हर तरह के ज्ञान की समान प्रतिष्ठा हो, उसमें ऊँच-नीच न हो. इससे सामाजिक सम्मान और आर्थिक बराबरी के रास्ते खुलेंगे. सबके पास सम्मानपूर्ण रोज़गार हो, सबकी आय के लिए एक से मानदंड हों तो गरीबी और बेरोज़गारी को ख़त्म करने का आधार बनेगा.

लोकविद्या-समाज छोटी पूंजी का बड़ा मैनेजर है।

ज्ञान की नगरी में ज्ञान का स्थाई घर पहचानें.

भारत में हर गाँव, क़स्बा और छोटे-बड़े शहर, नगर और महानगर में तमाम छोटी-छोटी दुकानदारी करने वाले और जनता की जरूरत के सामान बेचने वाले देखने को मिल जाएंगे। वाराणसी जैसे शहर में इनकी आबादी लाखों में होगी. इनमें छोटा कारीगर और सब्जी व फूल की खेती करने वाले परिवार जोड़ दिए जायें तो ये संख्या कई लाख हो जाएगी और देश में कई करोड़ ! ये सब इस नगर के लोकविद्या-समाज के परिवार हैं.

समाज में इनकी भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है. सामान्य जीवन के लिए आवश्यक तमाम वस्तुओं के उत्पादन या वितरण की क्रियाओं में लगे ये समाज छोटी पूँजी के प्रबंधन के ज्ञानी हैं. प्रबंधन के इनके ज्ञान की व्यापकता और गहराई को जानने के लिए आधुनिक अर्थशास्त्र अथवा प्रबंधन शास्त्र में कोई रास्ता नहीं है क्योंकि ये शास्त्र केवल अधिकाधिक मुनाफा बनाने की बड़ी पूँजी की सैद्धांतिक रचनाओं में बसते हैं.

हर गली मुहल्ले की छोटी-छोटी दुकाने इंसानियत को जिंदा बनाये रखने के प्रति सजग रहती हैं. इलाके के लोगों को सामान्य आवश्यकता की वस्तुओं के लिए दूर न जाना पड़े इसका ख्याल रखा जाता है. अगर ग्राहक मुसीबत के दिनों से गुज़र रहा जान पड़ता है तो इसे समझते हुए वस्तुओं को सस्ते में या उधार देने की प्रवृत्ति होती है. बृहत् समाज की शिराओं में सामाजिकता और सौहार्द का संचार करने वाला यह एक महत्वपूर्ण घटक है. उनका यह ज्ञान लोकविद्या है. किसी भी नगर के लिए ये छोटे दूकानदार खुशहाली और रौनक के आधार बनते हैं.

इस पत्रक द्वारा हम अपील करते हैं कि पटरी-ठेले-गुमटी और छोटे दुकानदार अपने ज्ञान की उच्च गुणवत्ता को जानें और ज्ञान की दुनिया और बृहत् समाज में अपने ज्ञान और इसलिए अपने वजूद की बराबर की प्रतिष्ठा का दावा पेश करें.

वैश्वीकरण के बाद से छोटे दुकानदारों, पटरी-ठेलेवालों का जीवन अत्यंत अनिश्चित और संघर्षपूर्ण हो गया है. तमाम कानून होने के बावजूद भी ये समाज हमेशा ही संसाधनों का अभाव, विस्थापन के दंश और प्रशासनिक प्रताड़ना को झेलते रहते हैं. **सरकारों की ज़िम्मेदारी है कि बाज़ारों में छोटे दुकानदारों को संरक्षण दें, उन्हें विस्थापित न किया जाये. साथ ही संवेदनशील नागरिकों की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि पटरी-ठेले-गुमटी और छोटी पूँजी के सभी व्यवसाइयों के सामान खरीदने को प्राथमिकता दें. इससे छोटी पूँजी के व्यवसाइयों के ज्ञान की प्रतिष्ठा होगी और बृहत् समाज में इंसानियत और भाईचारा मज़बूत होगा.**

●

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, भया न पंडित कोय

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय.

नैतिक सत्ता की कहानी

वाराणसी नगर किसकी सत्ता को मानता है? यहाँ तो केवल बाबा की सत्ता है, बाबा यानि बाबा विश्वनाथ. शिव-पार्वती की कल्पना नैतिक सत्ता की कल्पना है.

शिव-पार्वती की कल्पना में एक ऐसे समाज की अवधारणा है, जिसमें विविध समाज अपनी-अपनी पहचान और ज्ञान के साथ रहते हैं और मिलकर एक ऐसा बृहत् समाज बनाते हैं, जिसमें केन्द्रीय सत्ता की भूमिका न्यूनतम है. इस अरूप सत्ता को समझने और उसके समकालीन अर्थ गढ़ने की अनेक कहानियां समाज में चलती रहती हैं. ऐसी ही एक कहानी है.

कहा जाता है कि वाराणसी में एक राजा दिवोदास हो गए जो बड़े शिव भक्त थे. शिव और पार्वती दिवोदास पर अपने आशीर्वाद बरसाते और इस नगरी में निवास करते थे. लेकिन एक बार भक्त का शिव से कोई विवाद हुआ और शिव नाराज़ हो गए. वे पार्वती के साथ वाराणसी छोड़कर गंगा-गोमती संगम पर जाकर बस गए. बहुत समय बीत गया शिव जी आने का नाम न लें. भक्त बेचैन हो उठा. बहुत से लोग भी धीरे-धीरे नगर छोड़ कर गंगा-गोमती के संगम पर जाकर बसने लगे. दिवोदास सोच में पड़ गए. आखिर वे भी शिवजी को मनाने के लिए निकल पड़े. दिवोदास ने अपनी कसक को शिवजी के सामने खोला और कहा, “हे देव, मैं तो आप ही को पूजता हूँ, अन्य किसी को नहीं, फिर भी आप रूठे हैं?”

शिव जी ने हंस कर दिवोदास को कुछ दिन अपने पास रहने की सलाह दी. इन्हीं दिनों में उन्होंने दिवोदास को ज्ञान दिया. उन्होंने समझाया कि **‘किसी भी एक को सर्वश्रेष्ठ मान(पूज)ने’** की प्रवृत्ति अज्ञान नहीं तो क्या है? उन्होंने कहा कि वाराणसी में जब अन्य सभी देवता भी स्थापित होंगे तभी मैं वापस आऊँगा.

एक ही देव, एक ही विचारधारा, एक ही ज्ञान-धारा, एक ही सत्ता आदि की सोच अज्ञान ही है, अनैतिक है. समाज में सभी तरह के ज्ञान की समान प्रतिष्ठा में ही नैतिक समाज के निर्माण का आधार है.

वाराणसी ज्ञान पंचायत के बारे में

वाराणसी ज्ञान पंचायत यह वाराणसी के लोगों, स्त्री-पुरुषों का ज्ञान मंच है. इस मंच की मान्यता है कि हर मनुष्य, स्त्री और पुरुष, ज्ञानी है. यह ज्ञान पंचायत ज्ञान पर जन-सुनवाई का रूप भी है. इस पंचायत में पढ़े-लिखे और अनपढ़, प्रोफ़ेसर और सामान्य गृहिणी, कृषि वैज्ञानिक और किसान, टेक्सटाइल इंजीनियर और बुनकर, जल वैज्ञानिक और मल्लाह के ज्ञान में ऊँच-नीच नहीं की जाती और सभी के ज्ञान को बराबरी का दर्जा रहता है.

वाराणसी ज्ञान पंचायत, वाराणसी की व्यवस्थाओं को गढ़ने में सभी समाजों के ज्ञान की भागीदारी और सभी के ज्ञान को बराबर की प्रतिष्ठा का आग्रह करती है.

गाँव-गाँव में घाट-घाट पर
जंगल बस्ती हर पनघट पर,
मेला हाट और बाट-बाट पर
पग-पग पर हैं विविध ज्ञानधर.
यहीं से अलख जगाना है, कौन है ज्ञानी ?
ज्ञान कहाँ कहाँ ? फैसला यह करवाना है.

वाराणसी ज्ञान पंचायत के लिए लोकविद्या जन आन्दोलन, भारतीय किसान यूनियन, स्वराज अभियान, बुनकर साझा मंच, माँ गंगाजी निषादराज सेवा समिति द्वारा संयुक्तरूप से संयोजित. [संपर्क : चित्रा सहस्रबुद्धे (9838944822), लक्ष्मण प्रसाद (9026219913), रामजनम (8765619982), फ़ज़लुर्रहमान अंसारी (7905245553), हरिश्चंद्र बिन्द (9555744251)**] पता :** विद्या आश्रम, सा 10/82 अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी-221007